







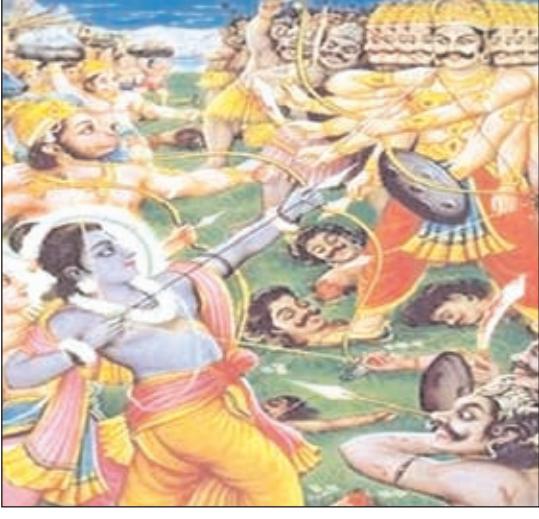








## देवी की शक्ति से विष्णु और शिव प्रकट होकर विश्व का पालन और संहार करते हैं



## शुभा दुर्दु

ये महाशक्ति ही सर्वकारणरूपा प्रकृति की आधारभूत होने से महाकारण हैं, ये ही मायाधीशवरी हैं, ये ही सर्जन-पालन-संहारकारिणी आद्या नारायणी शक्ति हैं और ये ही प्रकृति के विस्तार के समय भर्ता, भोक्ता और महेश्वर होती हैं।

भगवती दुर्गा ही संपूर्ण विश्व को सत्ता, स्फुर्ति तथा सरस्वता प्रदान करते हैं। जैसे दर्पण को स्पर्श कर देखा जाए तो वहां वास्तव में कुछ भी उपलब्ध नहीं होता, वैसे ही सच्चिदानंदरूपा महाशक्ति भगवती में संपूर्ण विश्व होता है। कोई इस परमात्मारूपा महाशक्ति को निर्णय कहता है तो दोनों की ओर थक्की होती है। ये दोनों तो वे दो नाम हैं। जब मायाशक्ति क्रियाशील होती है तब उसके सारों की श्रीसर्व और उषा, अधिकार महाशक्ति सुरुण कहलाती है और जब वह उसकी ओर उपलब्ध होती है, तो वे दोनों की ओर थक्की होती है। ये ही पंचमहाशक्ति, दशमहाविद्या तथा नवदुर्गा हैं। ये ही अन्नपूर्णा, जगद्गुरु, कामायनी, ललितायनी हैं। ये ही शक्तिमान और शक्ति हैं। ये ही नर और नरी हैं। ये ही माता, धाता, पितामह हैं, सब कुछ ये ही हैं।

यद्यपि श्रीभगवती नित्य ही है और उहाँ से सब कुछ व्याप्त है तथापि देवताओं के कार्य के लिए वे समय-समय पर अंक रूपों में जब प्रकट होती हैं, तब वे नित्य होने पर भी देवी उत्पन्न हुई-प्रकट हो गयीं, इस प्रकार संकेत होती है।

**नित्यैव सा जग्नुर्तिस्तया सर्विमदं ततम्**

तथापि तत्सुप्तिर्तिर्थं  
श्रूत्यां तम्।

दे वा ना ।  
कार्यस्वर्थमाविर्भवति सा यद्॥

उत्पन्नेति तदा लोके सा नित्यार्थाधीयते।

## महाभारत काल में पांडवों ने एक रात में बनाया था देवी का यह मंदिर

नवरात्रि में अगर आप माता के प्राचीन मंदिर धूमाना चाहते हैं, तो आपको मुंबई से 100 किलोमीटर की दूरी पर स्थित लोनावला के आई एकविरा देवी मंदिर जरूर जाना चाहिए। यह मंदिर महाभारत काल का बनाया हुआ है। सबसे खास बात यह है कि पांडवों ने अपने अज्ञातवास के दौरान इस मंदिर को केवल एक रात में बनाया था। आइए, जानते हैं अदिसक्ति आई एकविरा देवी मंदिर की खास बातें।

महाभारत के मुंबई से 100 किलोमीटर दूरी पर है लोनावला। प्राकृतिक रूप से लोनावला बहुत खूबसूरत जगह है। लोनावला में कार्ला गुफाएँ हैं। जहां पर एकविरा देवी का प्राचीन मंदिर स्थित है।

माता एकविरा की चूनी स्त्रीको करते हुए पांडवों ने पूरी रात जागकर लोनावला पहाड़ियों के बीच एकविरा देवी के मंदिर का निर्माण किया। जब देवी के मंदिर का निर्माण हो गया, तो पांडवों ने हाथ जोड़कर देवी एकविरा का आह्वान किया और उन्हें कहा मंदिर में दर्शन देने के लिए। पांडवों को पुकार सुनकर देवी एकविरा ने एक रात पर सोपे पांडवों को दर्शन दिए और उन्हें वरदान दिया कि अज्ञातवास के दौरान उन्हें कोई पाठ्यानन्दन नहीं पाएगा और उनका अज्ञातवास सरलता से पूरा हो जाएगा।

महाभारत की कहानी के अनुसार जब पांडव अपने अज्ञातवास के दौरान वहां पहुंचे थे तो पांडव भाइ दुखी होकर अपने साथ हुए घोर अन्याय के बारे में बातें कर रहे थे। तब पहाड़ियों के बीच पौजूट एकविरा माता ने पांडवों को बात सुनी, तो उनका मन भी पीड़ा से भर गया। तब एकविरा देवी ने पांडवों को कट सिकालने में सहायता की थी। एकविरा देवी ने कहा रहे पांडव उन्होंने मृतुगूरी सहायता जरूर कर सकती हैं।

देवी एकविरा की बात सुनकर पांडव उनके सामने नहीं बोला कि अगर वे अपने अज्ञातवास को सरल बनाना चाहते हैं, तो उन्हें एकविरा देवी के मंदिर का निर्माण इसी जगह करना होगा लेकिन इस मंदिर का निर्माण होने से पहले यानी 1 रात में होना चाहिए। एकविरा देवी की बातें सुनकर पांडव समझ गए कि माता उनकी छठ इच्छाशक्ति देखना चाहती हैं।

## श्रीरोदसागर में लक्ष्मी, दक्षकृति सती, दुर्गिनाशनी मेनकापुरी दुर्गा हैं। ये ही वाणी, विद्या, सरस्वती, सावित्री और गायत्री हैं।

शुभा दुर्दु

ये महाशक्ति ही सर्वकारणरूपा प्रकृति की आधारभूत होने से महाकारण हैं, ये ही मायाधीशवरी हैं, ये ही सर्जन-पालन-संहारकारिणी आद्या नारायणी शक्ति हैं और ये ही प्रकृति के विस्तार के समय भर्ता, भोक्ता और महेश्वर होती हैं।

भगवती दुर्गा ही संपूर्ण विश्व को सत्ता, स्फुर्ति तथा सरस्वता प्रदान करते हैं। जैसे दर्पण को रस्ता कर देखा जाए तो वहां वास्तव में कुछ भी कर सकते हैं।

बता दें कि देवीभागवत पुराण में कुछ ऐसे मंत्रों का वर्णन किया गया है। इन मंत्रों का जप करने से माता रानी को आसानी से प्रसन्न करके अपनी इच्छानुसार आशीर्वाद प्राप्त किया जा सकता है। आइए जानते हैं मनोकामना पूर्ति का मंत्र क्या है।

ये मंत्र ग्राहित करने से माता रानी को जप करने से माता रानी को इच्छानुसार आशीर्वाद प्राप्त किया जा सकता है। तो आइए जानते हैं देवीभागवत पुराण में मनोकामना के लिए सबसे बढ़िया मंत्र क्या है।

धन प्राप्ति के लिए मंत्र

दुर्गे स्मृता हरिषं भीतिमधेषजन्नोः।

सर्वस्वं स्मृता मतिमतीव शुभाम् ददसि।

अर्थ

धन संवर्धी परेशनियों से बुरी तरह परेशन हैं, तो

गरीबी दूर करने के लिए नियमित माता के सिद्ध मंत्र का जप करें।

संतान प्राप्ति के लिए मंत्र

सर्वार्था विनिर्मुदो धन धान्य सुतान्तिः।

मनुष्यो मत्रसादेन भवत्यति न संशय॥

अर्थ

धन प्राप्ति के अलावा संतान सुख पाने के लिए

रोजाना इस मंत्र का जप करें।

संकट से निकलने का मंत्र

शरणगतदीनतपरित्राणपरायण।

## मां दुर्गा के इन घमत्कारी मंत्रों के जप से पूरी होगी हर मनोकामना

## अनन्या मित्रा

देवीभागवत पुराण में कुछ ऐसे मंत्रों का वर्णन किया गया है। इन मंत्रों का जप करने से माता रानी को आसानी से प्रसन्न करके अपनी इच्छानुसार आशीर्वाद प्राप्त किया जा सकता है। आइए जानते हैं मनोकामना पूर्ति का मंत्र क्या है।

इन दिनों नवरात्रि का महापर्व चल रहा है। नवरात्रि के 9 दिनों में माता रानी पूर्वी पर होती है। ऐसे में मां दुर्गा को प्रसन्न करना और उनका आशीर्वाद पाना बहुत आसान होता है। इस दौरान माता रानी अपने भक्तों की सभी मनोकामनाएं पूरी करती हैं। ऐसे में आप अपनी मनोकामना की पूरति के लिए देवी भगवती के जप करने से माता रानी को मंत्र करते हैं।

बता दें कि देवीभागवत पुराण में कुछ ऐसे मंत्रों का वर्णन किया गया है। इन मंत्रों का जप करने से माता रानी को इच्छानुसार आशीर्वाद प्राप्त किया जा सकता है। आइए जानते हैं देवीभागवत पुराण में मनोकामना के लिए सबसे बढ़िया मंत्र क्या है।

धन प्राप्ति के लिए भगवती विनिर्मुदो धन धान्य सुतान्तिः।

सर्वस्वं स्मृता मतिमतीव शुभाम् ददसि।

अर्थ

धन संवर्धी परेशनियों से बुरी तरह परेशन हैं, तो

गरीबी दूर करने के लिए नियमित माता के सिद्ध मंत्र का जप करें।

संतान प्राप्ति के लिए मंत्र

सर्वार्था विनिर्मुदो धन धान्य सुतान्तिः।

मनुष्यो मत्रसादेन भवत्यति न संशय॥

अर्थ

धन प्राप्ति के अलावा संतान सुख पाने के लिए

रोजाना इस मंत्र का जप करें।

संकट से निकलने का मंत्र

शरणगतदीनतपरित्राणपरायण।



सर्वस्व बुद्धिरूपेण जनस्य हृदि स्थितेऽ।

सर्वार्थाद्वयं देवि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥

अर्थ

जीवन और मृत्यु के चक्र यानी बार-बार जन्म और मरण के संबंध में फंसते जा रहे हैं, तो रोजाना देवी भगवती के इस मंत्र का जप करें।

धन और स्वास्थ्य के लिए मंत्र

ऐश्वर्यं यत्रसादेन सूधाम्-अरोग्यं सम्पदः।

शरु द्वनि परो मोक्षः सुख्यते सान किं जैने ॥







